



HINDI / HINDI / HINDI A1

Higher Level / Niveau Supérieur (Option Forte) / Nivel Superior

Thursday 13 May 1999 (afternoon)/Jeudi 13 mai 1999 (après-midi)/Jueves 13 de mayo de 1999 (tarde)

Paper / Épreuve / Prueba 1

4h

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

Do NOT open this examination paper until instructed to do so.

This paper consists of two sections, Section A and Section B.

Answer BOTH Section A AND Section B.

Section A: Write a commentary on ONE passage.

Section B: Answer ONE essay question. Refer mainly to works studied in Part 3 (Groups of Works); references to other works are permissible but must not form the main body of your answer.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

NE PAS OUVRIR cette épreuve avant d'y être autorisé.

Cette épreuve comporte deux sections, la Section A et la Section B.

Répondre ET à la Section A ET à la Section B.

Section A: Écrire un commentaire sur UN passage.

Section B: Traiter UN sujet de composition. Se référer principalement aux œuvres étudiées dans la troisième partie (Groupes d'œuvres); les références à d'autres œuvres sont permises mais ne doivent pas constituer l'essentiel de la réponse.

INSTRUCCIONES PARA LOS CANDIDATOS

NO ABRA esta prueba hasta que se lo autoricen.

En esta prueba hay dos secciones: la Sección A y la Sección B.

Conteste las dos secciones, A y B.

Sección A: Escriba un comentario sobre UNO de los fragmentos.

Sección B: Elija UN tema de redacción. Su respuesta debe centrarse principalmente en las obras estudiadas para la Parte 3 (Grupos de obras); se permiten referencias a otras obras siempre que no formen la parte principal de la respuesta.

भाग 'क'

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, १(क) तथा १(ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

१(क)

दीक्षा ती हर पल स्वतन्त्र हो जाने की कुलबलाने लगी। मां के प्रति प्रेम का अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि उसके झारों पर नाचते रहे, दुनिया से कट जाओ, पंगू हो जाओ। दीक्षा विद्विषी हो उठी थी। बाहर निकलते ही उसका पंगू व्यक्तित्व उसे आहत करता, अपमानित करता। दीक्षा जब भी बाहर से लौटती उसके चेहरे पर आत्म विश्वास की लालिमा और अधिक दिखाई देती। हर बात में अपना निर्णय लेने की क्षमता, हर दिन के साथ बढ़ती जाती।

कैतकी एकांत पा रीती, बिसुरती और उपेक्षित महसूस करती। उसकी मानसिकता अजीब करवट ले रही थी। उसे लगता वह पागल थी, दीक्षा के लिए यह सब बलिदान उसे नहीं करना चाहिए था। उसे लगता दीक्षा चतुर है और अपने सुखी, सफल भविष्य के लिए उसने कैतकी का एक सीढ़ी की तरह प्रयोग किया है। मंजिल मिल जाने पर सीढ़ी की तरफ कीन देखता है? दीक्षा ऊपर उठती जा रही थी और कैतकी पीछे छूट गई थी। दोनों एक दूसरे पर दीघारोपण भर करतीं, पास बैठ विश्लेषण या समाधान नहीं। बीच की सड़ि बहुत बढ़ गई थी।

एक दिन प्रातः दीक्षा कैतकी के शयन में एक लिफाफा धमा बिना कुछ कहे चली गई। कुछ पल कैतकी इस छटके की सझती रही, फिर लिफाफा खोला, लिखा था - "मां, मैं तनुज के साथ जा रही हूं। तुम्हें समझाना मेरे बस की बात नहीं है। मैं और तनुज तुम्हारे साथ एक कठपुतली सा जीवन जीने के असमर्थ हैं। आखिर मैं एक भरी-पूरी नारी हूं। वह मेरा पुरुष है। मैं जीना चाहती हूं। मेरा अपना व्यक्तित्व है, अस्तित्व है जिसे मैं भरपूर अपनी क्षमताओं के साथ पहचानना चाहती हूं।

मेरे मानसिक द्वन्द्वों से, परेशानियों से, पंगु होते व्यक्तित्व से, मेरे अस्तित्व में होते घात-प्रतिघात से तुम्हें कोई सरोकार नहीं। तुम स्वयं पंगु हो और मुझे भी पंगु बना देना चाहती हो। पर मां, सच मानी मैं तुम्हारे लिए और अपने लिए जीवन्त होना चाहती हूं। पंगु क्या किसी पंगु की सझरा दे पाएगा? समय आ गया है, तुम जागी मां, सच जागी। मैं तुम्हारी भावना का सम्मान करती हूं, तुम्हें प्यार करती हूं। तुम्हारे योग्य बनकर लौटूंगी। मेरे इस निर्णय की सामाजिक प्रतिष्ठा के तराजू में रसकर मत तौलना। तुम्हारी प्रतिष्ठा और ममता पर प्रकृतिचिह्न न लगे। इसी लिए यह पत्र लिख रही हूं। बात करने में मुझे डर लगता है। कल मन्दिर में हम शादी करेंगे। आशीर्वाद देने आ सकी तो सारे सम्बन्ध बच जायेंगे। आगे तुम्हारी इच्छा, मैं तो अनुरोध कर सकती हूं। निर्णय तो मुझे लेना ही था और मैंने ले लिया है। तनुज अच्छा लड़का है। मन से तुम्हारा सम्मान करता है। उसके माता पिता भी वहां होंगे। अच्छा, मां, विदा दो।

बेटी दीक्षा "

कैतकी कुछ पल पेंड पर एक चिड़ा-चिड़िया की अपने बच्चों की चींच मार कर बाहर निकलते देखती रही। यह सारे का सारा क्रम उसके अन्दर चल रहे मानसिक विश्लेषण और दीक्षा के साथ जुड़ गया। यहां दीक्षा स्वयं चींच मार मां से अलग हो गई थी। शायद पशु पक्षियों और मनुष्य की सोच का अन्तर ऐसा ही होता होगा? वह छटपट तैयार हुई और दीक्षा-तनुज की आशीर्वाद देने जा पहुंची। आज उसे अपने अन्दर की प्रसव-पीड़ा से छुट्टी मिल गई थी। पहली बार उसने देखा कि दीक्षा कितनी सुन्दर और जवान हो गई है। मां बेटी के मध्य मुस्कराहटों का पुल बिछ गया था।

डा इन्दु बाली, "स्वतन्त्रता,"

हरिगन्धा, सितम्बर-अक्तूबर 1992, हरियाणा साहित्य अकादमी

1(ख)

इक्कीसवीं सदी का दूरदर्शन

बसंत की एक सुहानी रात
 हुई एक ऐसी बात
 भावों ने मन का द्वार खटखटाया
 और हमने अपने सामने
 5 मंद-मंद मुस्कुराते
 कामदेव को खड़ा पाया।
 मैंने उनसे पूछा—
 हे देव! हे महाराज
 हर तरफ तुम्हारा ही है राज
 10 शिव का तीसरा नेत्र भी
 तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाया
 तुम बाण पर बाण चलाते गए,
 दिन-दूना रात-चौगुना भार भू का बढ़ाते गए।
 अब तो भू पर
 15 इक्कीसवीं सदी का होने वाला है आगमन
 तुम्हारी असीम अनुकंपा से
 कैसा होगा तब उसका दूरदर्शन—
 पहले, घर की यूँ झलक दिखेगी
 कि आदमी को घर ही नहीं
 20 घर बनाने की जगह भी नहीं मिलेगी।
 उसका दिन खड़े-खड़े बीतेगा
 रात बंदर की तरह डाल पर बैठे-बैठे कटेगी,

ऐसे में जो बीमारी जकड़ेगी
 तब उसके लिए डाक्टर दवा नहीं देगा।
 25 बीमारी के नाम पर
 न निमोनिया, न टाइफाइड, न मलेरिया
 मात्र सौ डिग्री का बताएगा भूखोफिया
 दवा के नाम इस प्रकार लिखेगा—
 आटे की दो टेबलेट
 30 राइस का वन कैप्सूल
 तीन टाइम खिलाइए
 मिल्क के चार इंजेक्शन
 दो-दो घंटे के अंतराल पर लगाइए।
 साथ ही सलाह देगा—
 35 भूखोफिया कम न हो तो
 डोज डबल कर दीजिए
 पेड़ की डाल पर नहीं
 जगह ढूँढकर नीचे सुलाइए।
 इसलिए इक्कीसवीं सदी का दूरदर्शन
 40 करा न पाए भूखोफिया के ऐसे वीभत्स दर्शन,
 विज्ञान के चमत्कार को मान ले, अपना ले
 बाणों की मार से
 देश को बचाने के साथ ही
 मानव को फिर
 45 आदम युग में जाने से बचा ले
 आदम युग में जाने से बचा ले।

डा० गजेन्द्र बटोही, १९९६ की श्रेष्ठ हस्य-व्यंग्य रचनाएं, आदर्श प्रिंटर्स, दिल्ली ।

भाग 'ख'

नीचे दिए हुए विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। इस भाग में आपका उत्तर 'पार्ट 3' की पढ़ी हुई रचनाओं में से, कम से कम दो रचनाओं पर आधारित होना चाहिए। आप दूसरी कृतियों की भी चर्चा कर सकते/सकती हैं, परन्तु आपका निबंध इन पर आधारित नहीं होना चाहिए।

भक्ति काव्य

या

- 2 जिन रचनाओं की आप ने पढ़ा है उनके आधार पर ईश्वर-भक्ति की भावनाओं पर टिप्पणी कीजिए।

या

- 3 भक्ति काव्य और इस भाग में पढ़ी रचनाओं के साहित्यिक और काव्यनिक पक्ष तथा भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

नाटक

या

- 4 एक नाटक को पढ़ना इतना हर्षमय नहीं होता, स्टेज पर खेले गए नाटक की ही सराहना की जा सकती है। इस कथन से आप कहां तक सहमत हैं? जिन नाटकों की आपने पढ़ा है उनके आधार पर इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

या

- 5 जिन नाटकों की आपने पढ़ा है नाट्यकला की दृष्टि से उनके कथावस्तु, पात्र और चरित्र चित्रण, संवाद तथा भाषा-शैली का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

कविता (1)

या

- 6 इस काल की कविता में प्रकृति तथा नारी-चरित्र का उल्लेख करते हुए इस की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

या

- 7 इस काल के कवि मानवता की हरे भरे परिधान तथा नई प्रगतिशील विचार दृष्टि से देखना चाहते थे। जिन रचनाओं की आपने पढ़ा है उनके आधार पर इस पर टिप्पणी कीजिए।

कविता (२)

या

- ८ कविता आज की वास्तविकता से प्रेरित है स्वप्न और कल्पना पर कविता की विश्वास नहीं। इस कथन से आप कहां तक सहमत हैं ?

या

- ९ कविता में सरलता और लय का होना अनिवार्य है। जिन रचनायों की आपने पढ़ा है उनके आधार पर इस पर टिप्पणी कीजिए।

निबंध एवम् आत्मकथा

या

- १० आत्मकथा लिखना "आत्मा" की अच्छी कथा में प्रस्तुत करना है। जिन आत्मकथायों की आपने पढ़ा है उनकी भाषा-शैली की समीक्षा करते हुए टिप्पणी कीजिए।

या

- ११ एक अच्छे निबंध में क्या क्या विशेषताएं होनी चाहिये ?

उपन्यास में ग्राम्य-जीवन का चित्रण

या

- १२ उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत ग्राम्य - जीवन में नारी की विभिन्न समस्याओं का वर्णन किया गया है। उपन्यासों में वर्णित चरित्रों के आधार पर इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

या

- १३ जिन उपन्यासों की आप ने पढ़ा है उनके आधार पर टिप्पणी कीजिए कि क्या उनमें चित्रण किया गया ग्राम्य-जीवन अच्छा है ?

- 0 - 0 - 0 - 0 -